

गीत

राग-जोग कालंगरा

रहिजी अचेई शल रहिजी अचेई ।

श्रीमैथिलिचन्द्र मनठार, सरदार, शल रहिजी अचेई
अभागिणि जे सिरड़े जा सुहग,

भूमल भला भतार । शल रहिजी०

ब्रनि पवनि सन्सार सुख ब्रह्म सुख,

जुड़ियो जुगल सरकार ॥ शल रहिजी०

निमाणीय खे नगर में न छद्रिजाइ,

द्राणु द्रिजाइ द्रातार । शल रहिजी०

जियणु जद्दीअ जो जग में साहिब,

धूड़ि पेई अवहां धार ॥ शल रहिजी०

जुगल चरण खे गरीबि श्रीखण्डिड़ी,

वेही सेबिनि वणकार ॥ शल रहिजी०

थींदुव सदाई सतिगुरु साई,

कलंगीधरु कलितार ॥ शल रहिजी०